कक्षा-I

टिप्पणी

3

रामायण–III

पिछले पाठ में आपने पढ़ा कि पुत्र वियोग में दशरथ का स्वर्गवास हो जाता है। उसके बाद अयोध्या पर भरत ने शासन किया। राम को मनाकर वापस लाने के लिए भरत वन में भी गये। परंतु राम ने समझा कर उन्हें वापस भेज दिया। इस पाठ में राम द्वारा अगस्तय से शस्त्र प्राप्त करना, राक्षसों का राम द्वारा वध किये जाने के विषय में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे–

- इस पाठ के श्लोकों का संस्कृत में शुद्ध उच्चारण कर पाने में; और
- रामायण की प्रसङ्गनुसार कथा को बता पाने में।

3.1 श्लोक 41–60

çfo'; rq egkj.;a jkeks jkthoykspu%A
fojkèka jk{kla gRok 'kjHk³~xa nn'k gAA1-1-41AA

इस महारण्य (दण्डकवन) में पहुँचकर सुन्दर नयनों वाले (रात्रीवलोकन) राम ने विरान्ध नामक एक राक्षस का वध किया।

तत्पश्चात् वे सुतीक्ष्ण, अगस्त्य और अगस्त्य के भाई से मिले।

टिप्पणी

l|rh{.k pkl;xLR;| p vxLR;Hkkrj| rFkkA
vxLR;opukPpSo txzkgUæ 'kjklueAA1-1-42AA

अगस्त्य के कहने पर उन्होंने इन्द्र का धनुष ग्रहण किया और खुश होकर एक एक पैने तलवार तथा अचूक तरकस को उनसे (अगस्त्य) प्राप्त किया।

[kMx p ijeçhrLrw.kh pk{k;lk;dkA
olrLrL; jkeL; ou oupjS lgAA1-1-43AA

उस वन में वनवासियों के साथ रहते समय राक्षसों और असुरों का नाश करवाने की इच्छा से वनवासी राम के पास गये।

_"k;k·H;kxeUlo oèkk;klqjj{klkeA
l r"kka çfr'kJko jk{klkuka rFkk ouAA1-1-44AA

जैसा कि वहां के वनवासियों ने उनसे प्रार्थना की थी, राम ने उन राक्षसों को मारने की प्रतिज्ञा की।

çfrKkr'p jkes.k oèkL l;fr j{klkeA
_"kh.kkefXudYikuka n.Mdkj.;okflukeAA1-1-45AA

r=u r=o olrk tuLFkkufuokfluhA
fo:firk 'kiZ.k[kk jk{klh dke:fi.khAA1-1-46AA

rr''ki.k[kkokD;kn| äkU lo|jk{klkuA
[kj f=f'kjl po n"k.k po jk{klеAA1-1-47AA

इस प्रतिज्ञा को सुनकर अग्नि के समान तेजस्वी दण्डवासी ऋषियों ने माना कि अब राक्षस अवश्य ही मारे जायेंगे। इसके पश्चात् उसी जनस्थान में रहने वाले कामरूपिनी राक्षसी सूर्पणखा को राम ने विरूप कर दिया। तत्पश्चात् शूर्पणखा की बातों से उत्तेजित होकर लड़ने के लिए आये खरदूषण और त्रिशिरादि तथा उनके साथ आये अनुचरों का राम ने युद्ध में वध कर डाला।

fu t?kku ou jkeLr"kk po inkuxkuA
ou rfLefUuo lrk tuLFkkufuokflukeAA1-1-48AA

उस वन में रहते हुए राम ने चौदह हजार जनस्थानवासी राक्षसों को मार डाला।

j{klk fugrkU;klU lg lkf.k prn'kA
rrk Kkfroèk JRok jko.k% ØkèkeÆNr%AA1-1-49AA

अपने लोगों का वध किये जाने के विषय में सुनकर रावण क्रोध से मुर्छित हो गया तथा उसने मारीच राक्षस से सहायता मांगी।

lgk; oj;kekl ekjhp uke jk{kleA
ok;ek.kLlcg'kk ekjhpu l jko.k%AA1-1-50AA

मारिच राक्षस ने रावण को बहुत बार मना किया और समझाया कि अपने से अधिक शक्तिशाली के साथ शत्रुता नहीं करनी चाहिए।

u fojkèkk cyork {kek jko.k ru rA
vuknR; r| r}kD;| jko.k% dkypkfnr%AA1-1-51AA

किंतु कालवशवर्ती रावण ने मारिच की कही बातों का अनादर करते हुए मारिच के साथ वह उस आश्रम में चला गया, जहां राम रह रहे थे।

txke lg ekjhpLrL;kJein rnkA
ru ek;kfouk njeiokå u'ikRetkAA1-1-52AA

मारिच अपनी मायावी शक्ति के प्रयोग से दोनों राजकुमारों (राम और लक्ष्मण) को आश्रम से दूर ले गया। रावण ने उस समय वहां सीता की सहायतार्थ उपस्थित जटायु को मृतप्राय कर दिया और राम की भार्या सीता का हरण कर ले गया।

tgkj Hkk;k jkeL; xèk gRok tVk;|"keA
xèk p fugr n"Vok ârk JRok p elfFkyheAA1-1-53AA

जटायु को मृतप्रायः स्थिति में देखकर और सीता का हरण किया जाना सुनकर राम जी शोक संतप्त हो गये और विलाप करने लगे।

jk?ko''kkd lUrIrk foyykikdyfUæ;%A
rrLruo 'kkdu xèk nXèok tVk;|"keAA1-1-54AA

उसके पश्चात शोकग्रस्त रामजी ने जटायु की अन्तिम क्रिया सम्पन्न की और सीता को ढूंढते समय मार्ग में एक राक्षस को देखा।

टिप्पणी

ekxek.kk ou lhrk jk{kl lUnn'k gA
dcUèkUuke :i.k fod`r ?kkjn'kueAA1-1-55AA

उसका नाम कबंध था और वह बहुत ही विकराल और भयंकर रूप का था। राम ने उसे मार कर अग्नि में जला दिया और उसे स्वर्ग में भेज दिया।

r fugR; egkckgnnkg Loxr'p l%A
l pkL; dFk;kekl 'kcjÈ èkepkfj.kheAA1-1-56AA

स्वर्ग जाते वक्त कबंध राक्षस ने राम से धर्म में निपुण और धर्माचारिणी (धर्म का पालन करने वाली) तपस्विनी (श्रमणी) शबरी के पास जाने के लिए कहा।

Je.kÈ èkefu i.kkefHkxPNfr jk?koA
lk·H;xPNUegkrtk''kcjÈ 'k=lnu%AA1-1-57AA

शत्रु के नाशक महातेजस्वी दशरथ पुत्र राम शबरी के पास गये जहां पर शबरी ने राम का बहुत ही सत्कार के साथ पूजन किया।

'kc;k iftrLlE;xkek n'kjFkRet%A
iEikrhj guerk l³xrk okuj.k gAA1-1-58AA

पम्पा सर के निकट राम की मुलाकात हनुमान नामक वानर से हुई और हनुमान के कहने पर उनका सुग्रीव के साथ समागम हुआ।

gue}pukPpo lxho.k lekxr%A
lxhok; p rRlo 'klækek egkcy%AA1-1-59AA

वीर पराक्रमी राम ने शुरु से लेकर अंत तक विशेषकर सीता के हरण किये जाने का हाल सुग्रीव को सुनाया।

vkfnrLr|FkkoÙk lhrk;k'p fo'k"kr%A
lxho'pkfi rRlo JRok jkeL; okuj%AA1-1-60AA

वानर सुग्रीव ने सारा वृतान्त बहुत ही ध्यान से सुना और अग्नि को साक्षी मानकर राम से मित्रता कर ली।

पाठगत प्रश्न 3.1

1. राम ने अगस्त्य से क्या ग्रहण किया?
2. शूर्पणखा कौन थी?
3. राम द्वारा वनस्थान में कितने राक्षस मारे गये थे।
4. जटायु कौन था।

आपने क्या सीखा

- राम का अगस्त्य से शस्त्र प्राप्त करना।
- राम ने अनेक राक्षसों के साथ लडाई की।
- लक्ष्मण ने शूर्पणखा को विकृत कर दिया।

- सीता का हरण।
- राम का सुग्रीव और हनुमान से मिलाप।

पाठांत प्रश्न

1. मारिच कौन था।
2. सीता हरण के बाद राम की स्थिति कैसी थी?
3. शबरी कौन थी?

उत्तरमाला

3.1

1. एक धनुष, तलवार और तरकश।
2. शूर्पणखा एक राक्षसी थी जो अपना रूप बदल लेती थी।
3. 14000
4. एक दैवीय गीद्ध।